**SHODH SAMAGAM**

**ISSN : 2581-6918 (Online), 2582-1792 (PRINT)**

# दैनिक जीवन में उपयोगी वस्तुओं पर दृश्यकला

**नवीन कुमार विश्वकर्मा,** शोधार्थी, ललित कला विभाग, महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ, वाराणसी, उत्तरप्रदेश, भारत

**ORIGINAL ARTICLE**

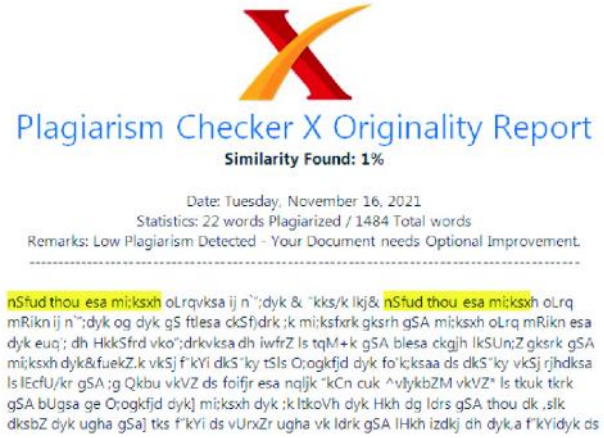



**Corresponding Author**
**नवीन कुमार विश्वकर्मा,** शोधार्थी,
ललित कला विभाग,
महात्मा गाँधी काशी विद्यापीठ,
वाराणसी, उत्तरप्रदेश, भारत

shodhsamagam1@gmail.com

Received on : 16/11/2021
Revised on : -----
Accepted on : 23/11/2021
Plagiarism : 01% on 16/11/2021




## शोध सार

*दैनिक जीवन में उपयोगी वस्तु उत्पाद पर दृश्यकला वह कला है जिसमें बौद्धिकता या उपयोगिता होती है। उपयोगी वस्तु उत्पाद में कला मनुष्य की भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति से जुड़ा है। इसमें बाहरी सौन्दर्य होता है। उपयोगी कला–निर्माण और शिल्प कौशल जैसे व्यवहारिक कला विषयों के कौशल और तरीकों से सम्बन्धित है। यह फाइन आर्ट के विपरित में दुसरा शब्द बना 'अप्लाईड आर्ट' से जाना जाता है। इन्हें हम व्यवहारिक कला, उपयोगी कला या सजावटी कला भी कह सकते है। जीवन की ऐसा कोई कला नहीं हैं, जो शिल्प के अन्तर्गत नहीं आ सकता है। सभी प्रकार की कलाएं शिल्पकला के अन्तर्गत ही आती है। आधुनिक काल में इन शब्दों का सूक्ष्म रूप से अध्ययन एवं विवेचन किया है और अर्थ में प्रयुक्त किया जाता है। उपयोगी कला को भी सौन्दर्य विशेष कला माना जाता है।*

## मुख्य शब्द

**उपयोगी कला, व्यवहारिक कला, शिल्पकला, भौतिक आवश्यकता, वस्तु निर्माण, दृश्यकला, हस्तकला.**

उपयोगी वस्तु उत्पाद में दृश्यकला से अभिकल्पन व निर्माण को आज कल प्रायः शिल्प एवं क्राफ्ट के कामों को कला शब्द से भी संबोधित किया जाता है, जैसे–लकड़ी की कला, शीशे की कला, कपड़ों की कला, प्लास्टिक कला इत्यादि। वास्तव में कला साहित्य में कला के जो भेद प्रस्तुत किये गये हे उनमें कला और उपयोगी कला दोंनो को माने गये है। सभी प्रकार के शिल्प तथा क्राफ्ट उपयोगी कला के अन्तर्गत ही आ जातें है। उपयोगी कला का उचित अर्थ यह है कि ललित कला के प्रयोग से उपयोगी वस्तु उत्पाद में किसी क्राफ्ट अथवा शिल्प के प्रभाव से वस्तु उत्पाद को और अधिक आकर्षक, काल्पनिक और सजावटी उत्पाद बनाया जाये। उपयोग

में लायें जाने वाले दैनिक वस्तुए ,जैसे – लकड़ी से बने खिलौने, सजावटी उपयोगी फर्नीचर, शीशे व अन्य धातु से बने आकर्षण वस्तुए बनाना, परिधानों में लोक कला व बेलबूटी छापना अथवा कढ़ाई–करना, आलेखन रंगोली बनाना, विभिन्न रूप में हस्तकला का कार्य करना और विभिन्न वस्तु उत्पाद के निर्माण व अभिकल्पन में दृश्यकला का उपयोग करना। कोई भी कला या ललित कला जब किसी उपयोगी भौतिक कार्यों में प्रयुक्त होती है तो वह उपयोगी कला बन जाती है और जब उपयोगी वस्तु उत्पाद में कला द्वारा अभिकल्पन होती है तो वह उपयोगी वस्तु उत्पाद में कला आकर्षक बन जाती है और जब इन कला द्वारा कोई उपयोगी वस्तु में अभिकल्पन होता है तो कोई भी कला को उपयोगी कला कहेंगे।

प्रायः शिल्प और क्राफ्ट के कार्य को कौशल शब्द से संबोधित किया जाता है। वास्तव में कौशल का अर्थ होता है कि किसी कार्य करने की प्रणाली या ढंग में हर प्रकार से पूर्णता प्राप्त करना। जिस भी कार्य को कुशलता से चतुराई के साथ पूर्ण किया जाये वही कौशल है। कौशल भाषा माना जा सकता है। प्रत्येक कार्य को पुरा करने की प्रणाली को तकनीक कहते है। जीवन को सरल से सरल या साधारण से साधारण कार्यों में रचना, निर्माण, अभिकल्पन का कार्य है, उन सभी में कौशल तकनीक की परम आवश्यकता होती है। शिल्पकला या क्राफ्ट के बात करे तो हम यह कह सकते है दैनिक जीवन में उपयोग होने वाले वस्तु अत्यधिक शिल्प और क्राफ्ट में पाये जाते है। आजकल अनेक कार्यों में शिल्प या क्राफ्ट देखा जा सकता है।

शिल्प शब्द का सामान्य रूप से प्रयोग इन कार्यों के लिये किया जाता है जिसके द्वारा भारी व ठोस वस्तुओं का निर्माण किया जाता है। क्राफ्ट में मानव निर्मित कृतियों में हल्की सामग्री अथवा वस्तुओं का प्रयोग किया जाता है, परन्तु शिल्प के कार्य में कच्चे ठोस पदार्थों, जैसे– मिट्टी, प्रस्तर, लकड़ी एवं धातु आदि का प्रयोग किया जाता है।

## उपयोगी कलात्मक वस्तु–उत्पाद के बारे में

सामान्य रूप से यह कला सौन्दर्यात्मक है और यह एक उपयोगी वस्तु उत्पाद में कला का सौन्दर्यात्मक पहलू है और यह एक उपयोगी दृश्यकला है। उपयोगी कला का निर्माण दैनिक जीवन में उपयोग में लाये जाने वाले वस्तुओं में सम्मिलित है। उपयोगी कला का निर्माण कपड़े पर अभिकल्पन, दीवारों पर अभिकल्पन, फर्नीचर पर अभिकल्पन, टाइल्स पर अभिकल्पन, ज्वेलरी पर अभिकल्पन, शीशे के सामग्री पर अभिकल्पन, इलेक्ट्रानिक उत्पादों पर अभिकल्पन, प्लास्टिक उत्पादों पर अभिकल्पन इत्यादि पर किया जा रहा है।

## कपड़े पर अभिकल्पन

वस्त्र मानव–जीवन की प्राथमिक आवश्यकताओं में से एक है। वस्त्र मानव–देह का आवरण ही नही आभूषण भी है। यह शरीर का मात्र परिधान हीं कलात्मक फैशन भी है। वस्त्र मानव–देह का अलंकरण मानव की स्वाभाविक एवं सांस्कृतिक प्रावृत्ति का पहचान है। वस्त्रों पर डिजाइन को छापने की कला प्राचीन काल से भारत में चली आ रही है। चमकीले एवं विरोधी रंगों तथा तरह–तरह की डिजाइन वस्त्रों की सजावट करना, भारतीय छपाई कलाकारों की विशेषता रही है, जिनमें राजस्थान में सांगानेरी और बंगरू की छपाई, आन्ध्र प्रदेश की कलमकारी, गुजरात व सिन्ध की अहजरख, बिहार की लोक कला, मिथिला पेंटिंग और उड़ीसा की पट्टचित्र आदि से वस्त्र अलंकृत किये जाते है।

## दीवारों पर अभिकल्पन

आधुनिक जमाने में कोई इंसान नही है, कि उसके पास कोई घर नहीं हो। छोटे बड़े हर किसी ने अपने जरूरत के हिसाब से एक मकान या घर जरूर ही बनाते है। प्रगति के विकाश के साथ इंसान का भी विकास जोर–शोर से हो रहा है। इस दौर में मानव समुदाय एक दुसरे को देखकर एक अलग रेस में लगे है कि यह किया है तो मुझे भी करना है क्योंकि नकल करना इंसान की आदत है। पहले जब मकान बनते थे तो लोग दीवार में चूना या गेरू लगा देते थे फिर अलग–अलग वेराइटी का डिस्टंपर दीवार पर, फिर अलग क्वॉलिटी का कलर लगा देते हैं, पर इसे लगाने से भी लोगों को खुशी नहीं मिल रहा। अब घर को अन्दर से महल जैसा सुन्दर बनाने के लिये आ गया है प्लस्टिक वॉलपेपर, क्योंकि कलर करने से अच्छा है, देखने में जैसे लगे टाइल्स लगा हुआ है।

## फर्नीचर पर अभिकल्पन

पहले लोग लकड़ी से बने हुए वस्तुओं का उपयोग करते थे, जिसमें वैज्ञानिक तकनीक का उपयोग हुआ होता था, उसमें सौन्दर्य नहीं होता था। बस उपयोगी वस्तु ही होता था पर आज का दौर है जहाँ फर्नीचर पर अभिकल्पन किया जा रहा है। फर्नीचर, डिजाइन के उत्पाद और सजावटी कला का एक रूप बनता जाता है। फर्नीचर–धातु, प्लास्टिक और लकड़ी कई सामग्री से बनाया जा सकता है। फर्नीचर, लकड़ी के विभिन्न जोड़ों से बनाया जाता है जो अक्सर स्थानीय संस्कृति को प्रतिबंधित करता है।

## टाइल्स पर अभिकल्पन

आज के समय में कोई भी घर शायद ही टाइल्स के उपयोग से बच पाया है। आज के जमाने में टाइल्स बिना घर बन ही नहीं सकते। टाइल्स किचेन, ड्राइंग रूम, बेड रूम तथा घर के हर हिस्से पर इसका इस्तेमाल किया जा रहा है। आज के जमाने में बच्चे से बड़े सब जानते है कि टाइल्स क्या है। स्कूल, कालेज, ऑफिस तथा अपने घर पर टाइल्स का सदुपयोग हम अपने हिसाब से करते है। जब हम बहुत मेहनत करके अपने सपनों का घर बना लेते है, तो उस घर को अपने हिसाब से डिजाइन करने का दिल करते है।

घर में उपयोग होने वाले टाइल्स के डिजाइन में सबसे पहले आते है टाइल्स डिजाइन जैसे कि आपका ड्राइंग रूम किचेन तथा बाथरूम। टाइल्स के बिना घर का सौन्दर्य मुमकिन ही नहीं। आजकल के जमाने में हर बच्चे को यह पता हैं टाइल्स एक चौकोर या आयताकार पतली वस्तु होती है। यह टाइल्स कठोर सामग्री जैसे– सिरेमिक, पत्थर, धातु, पक्की हुई मिट्टी या यहाँ तक की काँच के टुकड़े से बनाया जाता है। यह विभन्न आकार व कलर का होते है जिसका इस्तेमाल, आमतौर पर घर के छतों, फर्शों, दीवारों या अन्य कई जगह पर लगाया जाता है।

## ज्वेलरी पर अभिकल्पन

कला के गहने, रचनात्मक अभिव्यक्ति और डिजाइन पर जोर देते है और विभिन्न प्रकार की सामग्रियों के उपयोग की विशेषता है, अक्सर सामान्य या कम आर्थिक मूल्य। इस अर्थ में यह पारम्पारिक या बढ़िया गहनों में ''कीमती सामग्री'' (जैसे सोना, चाँदी और रत्न) का उपयोग किया जाता है, जहाँ वस्तु का मूल्य उस सामग्री के मूल्य से जुड़ा होता है, जिससे इसे बनाया जाता है। कला के गहने का भी ललित कला और डिजाइन से सम्बन्ध होता है। ऐतिहासिक सन्दर्भों, क्षेत्रीय और विश्व की घटनाओं पर प्रतिक्रियाओं, नई उपलब्ध सामग्री और अन्य कारको के संयोजन के आधार पर गहने एक देश की पहचान को दर्शाते है।

## निष्कर्ष

मानव जीवन में उपयोग होने वाले भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु उपयोगी वस्तुओं को कला से अलंकृत किया जाता है। इन्हें व्यव्हारिक कला, उपयोगी कला या सजावटी कला भी कह सकते है। इनसे शिल्प कला जो की अब हैण्डीक्राफ्ट नाम से प्रचलित है जो उपयोगी वस्तु में कला अंलकारित कला है जो आप कई जगह देख सकते है जैसे दीवाल पर लगाने के लिये अंलकारित वॉलपेपर है। पोशाकों पर भी विभिन्न तरह के अभिकल्पन का उपयोग किया जा रहा है। अब तो लोक कला को भी कपड़ों पर बेहतर तरीके से उतारा जा रहा हैं। सामान्य रूप से यह कला सौन्दर्यात्मक पहलू है और उपयोगी वस्तु उत्पाद पर कला अभिकल्पन है।

## सन्दर्भ सूची

1. अग्रवाल, पृथ्वी कुमार, *प्राचीन भारतीय कला एवं वस्तु*।
2. गुप्ता मीनाक्षी, *भारतीय वस्त्रकला।*
3. मिश्रा ममता, *प्राचीन भारत में वस्त्रकला।*
4. माथुर कमलेश, *हस्तशिल्प कला के विविध आयम।*
5. भारत में हस्तशिल्प और वस्त्र उद्योग, योजना, अप्रेल 2019, आईएसएसएन 0971–8397।

********